# जैसलमेर की राजकुमारी

**—आचार्य चतुरसेन शास्त्री**

## लेखक—परिचय

यशस्वी साहित्यकार होने के अतिरिक्त आचार्य चतुरसेन शास्त्री एक लब्धप्रतिष्ठ वैद्य भी थे। कहानी, उपन्यास, नाटक, गद्यकाव्य उन्होंने लिखे। संस्कृत साहित्य का उनका अध्ययन बहुत गहन तथा सघन था। पुरानी पीढ़ी के साहित्यकारों में निःसन्देह उनका महत्त्वपूर्ण स्थान है। विभिन्न विषयों पर उनकी कोई डेढ़—सौ से ऊपर रचनाएँ प्रकाशित रूप में प्राप्त हैं।

उपन्यासों में 'वैशाली की नगरवधू', 'सोमनाथ', 'वयं रक्षामः' व 'गोली' तथा कहानी—संग्रहों में 'नवाब ननकू', 'लम्बग्रीव' आदि आपकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

विषय—वस्तु की दृष्टि से शास्त्री जी ने मुगल—कालीन इतिहास का विशेष रूप से अध्ययन किया था और उस युग के जीवन—वृत्त से कई रोचक और मार्मिक प्रसंग चुनकर उन्हें अपनी मर्मज्ञता का प्रसाद दिया था। आपकी रचनाओं में अद्‌भुत प्रवाह, वर्णन की मनोहारी सजीवता तथा भाषा का अनूठा लालित्य मिलता है।

## पाठ—परिचय

राजस्थान के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन का भी आपने निकट से अध्ययन किया था। उधर राजस्थान के ऐतिहासिक आख्यानों से तो आपने अपनी कृतियों के लिए प्रचुर प्रेरणा प्राप्त की ही थी। 'जैसलमेर की राजकुमारी' ऐसी ही एक प्रेरणा की सृष्टि है।

**** ****

राजकुमारी ने हँसकर कहा— 'पिताजी, दुर्ग की चिन्ता न कीजिये। जब तक उसका एक भी पत्थर—पत्थर से मिला है, उसकी रक्षा मैं करूँगी। अलाउद्दीन कितनी ही वीरता से हमारे दुर्ग पर आक्रमण क्यों न करे, आप निर्भय होकर शत्रु से लोहा लें।'

यह जैसलमेर के राठौड़ दुर्गाधिपति महाराव रत्नसिंह की कन्या थी। इस समय बलिष्ठ अरबी घोड़े पर चढी हुई थी और मर्दानी पोशाक पहने थी। उसकी कमर में दो तलवारें लटक रही थीं। कमरबन्द में पेशकब्ज, पीठ पर तरकस और हाथ में धनुष था। वह चपल घोड़े की रास को बलपूर्वक खींच रही थी, जो एक क्षण भी स्थिर रहना नहीं चाहता था। रत्नसिंह जरहबख्तर पहने एक हाथी के फौलादी हौदे पर बैठे आक्रमण के लिए प्रस्थान कर रहे थे। सामने राजपूत सवार नंगी तलवारें लिये मैदान में खड़े थे।

उनके घोड़े हिनहिना रहे थे और शस्त्र झनझना रहे थे।

रत्नसिंह ने पुत्री के कन्धे पर हाथ रखकर कहा– ''बेटी, तुझसे मुझे ऐसी ही आशा है। मैंने तुझे पुत्री नहीं– पुत्र की भाँति पाला और शिक्षा दी है। मैं दुर्ग को तुझे सौप कर निश्चिन्त हो रहा हूँ। सावधान रहना! शत्रु वीर ही नहीं, धूर्त्त और छलिया है।''

बालिका ने वक्रदृष्टि से पिता को देखा और हँसकर कहा– ''नहीं, पिताजी! आप निश्चिन्त होकर प्रस्थान करें।''

रत्नसिंह ने एक तीव्र दृष्टि अपने किले के धूप से चमकते हुए कँगूरों पर डाली और हाथी बढ़ाया। गगनभेदी जय–निनाद से धरती–आसमान काँप उठे। एक विशालकाय अजगर की भाँति सेना किले के फाटक से निकलकर पर्वत की उपत्यका में विलीन हो गयी। इसके बाद घोर चीत्कार करके दुर्ग का फाटक बन्द हो गया। टिड्डीदल की भाँति शत्रु ने दुर्ग को घेर रखा था। सब प्रकार की रसद बाहर से आनी बन्द थी। प्रतिदिन शत्रु गोलियों और तीरों की वर्षा करता था; पर जैसलमेर का अजेय दुर्ग गर्व से मस्तक उठाये खड़ा था। शत्रु समझ गये थे कि दुर्ग विजय करना हँसी–ठट्ठा नहीं है। दुर्ग–रक्षिणी राजनन्दिनी रत्नवती निर्भय अपने दुर्ग में सुरक्षित बैठी शत्रुओं के दाँत खट्टे कर रही थी। उसकी अधीनता में पुराने विश्वस्त राजपूत वीर थे, जो मृत्यु और जीवन को खेल समझते थे। वह अपनी सखियों समेत दुर्ग के किसी बुर्ज पर चढ़ जाती और शत्रु–सेना का ठट्ठा उड़ाती हुई वहाँ से सनसनाते तीरों की वर्षा करती। वह कहती– ''मैं स्त्री हूँ, पर अबला नहीं। मुझ में मर्दों–जैसा साहस और बल है।''

उसकी बातें सुन सहेलियाँ ठह ठहाकर हँस देती थीं। प्रबल शत्रु–दल द्वारा आक्रांत दुर्ग में बैठना राजकुमारी के लिए एक विनोद था।

मलिक काफूर एक गुलाम था जो इस समय शत्रु–सेना का अधिपति था। वह दृढ़ता और शांति से राजकुमारी की चोटें सह रहा था। उसने सोचा था कि जब किले में खाद्य पदार्थ कम हो जायेंगे, दुर्ग वश में आ जायेगा। फिर भी वह समय–समय पर दुर्ग पर आक्रमण कर देता था, परन्तु दुर्ग की चट्टानों और भारी दीवारों को कोई क्षति नहीं पहुँचती थी। राजकुमारी बहुधा बुर्ज पर से कहती– ये धूर्त्त गर्द उड़ा कर गोलियों की वर्षा कर मेरे किले को गन्दा और मैला कर रहे हैं। इससे क्या लाभ ?

शत्रु–दल ने एक बार दुर्ग पर प्रबल आक्रमण किया। राजकुमारी चुपचाप बैठी रही। जब शत्रु आधी दूरी तक दीवारों पर चढ़ आये, तब भारी–भारी पत्थरों के ढोंके और गर्म तेल की वह मार पड़ी कि शत्रु–सेना छिन्न–भिन्न हो गयी। लोगों के मुँह झुलस गये। कितनों की चटनी बन गयी। हजारों शत्रु–सैनिक तौबा–तौबा करके प्राण लेकर भागे। जो प्राचीर तक पहुँचे, उन्हें मौत के घाट उतार दिया गया।

सूर्य छिप रहा था। प्राची दिशा लाल–लाल हो रही थी। राजकुमारी कुछ चिन्तित भाव से अति दूर पर्वत की उपत्यका में सूर्य को डूबते हुए देख रही थी। उसे चार दिन से पिता का सन्देश नहीं मिला था। वह सोच रही थी कि इस समय पिता को क्या सहायता दी जा सकती है। वह एक बुर्ज के नीचे बैठ गयी। धीरे–धीरे अन्धकार बढ़ने लगा। उसने देखा– एक काली मूर्ति धीरे–धीरे पर्वत की तंग राह से किले की ओर अग्रसर हो रही है। उसने समझा कि पिता का सन्देशवाहक होगा। वह चुपचाप उत्सुक होकर उधर ही देखती रही। उसे आश्चर्य तब हुआ जब उसने देखा कि वह गुप्तद्वार की ओर न जाकर सिंहद्वार की ओर जा रहा है। तब अवश्य शत्रु है। राजकुमारी ने एक तीखा बाण अपने हाथ में लिया और छिपती हुई उस मूर्ति के साथ ही द्वार की पौर के ऊपर आ गयी। वह मूर्ति एक गठरी को पीठ से उतार कर प्राचीर पर चढ़ने का उपाय सोच रही थी। राजकुमारी ने धनुष पर बाण चढ़ा कर ललकार कर कहा–

वहीं खड़ा रह और अपना अभिप्राय बता।

कालरूप राजकुमारी को सम्मुख देख, वह व्यक्ति भयभीत स्वर में बोला– मुझे किले में आने दीजिये, बहुत जरूरी सन्देश है।

''वह सन्देश वहीं से कह।''

''वह अतिशय गोपनीय है।''

''कुछ चिन्ता नहीं, कह।''

''मैं किले में आकर कहूँगा।''

उससे पूर्व यह तीर तेरे कलेजे के पार हो जायेगा।''

''महाराज विपत्ति में हैं। मैं उनका चर हूँ।''

''चिट्ठी हो तो फेंक दे।''

''जबानी कहना है।''

''जल्दी कह।''

''यहाँ से नहीं कह सकता।''

''तब ले।'' इतना कहकर राजकुमारी ने तीर छोड़ दिया। वह उसके कलेजे को पार करता हुआ निकल गया। राजकुमारी ने सीटी दी। दो सैनिक आ हाजिर हुए। कुमारी की आज्ञा पा रस्सी के सहारे उन्होंने नीचे जा, मृत व्यक्ति को देखा– शत्रु था। दूसरा व्यक्ति पीठ पर गठरी में बँधा था। यह देख राजकुमारी जोर से हँस पड़ी। इसके बाद वह प्रत्येक बुर्ज पर घूम–घूम कर प्रबन्ध और पहरे का निरीक्षण करने लगी। पश्चिमी फाटक पर जाकर उसने देखा– द्वार–रक्षक द्वार पर न था। कुमारी ने पुकार कर कहा– यहाँ पहरेदार कौन है?

एक वृद्ध योद्धा ने आगे बढ़कर कुमारी को मुजरा किया। उसने धीरे–धीरे कुमारी के कान में कुछ और भी कहा। वह हँसती–हँसती बोली–'ऐसा, ऐसा? अच्छा, वे तुम्हें घूँस देंगे, बाबा जी साहब?'

'हाँ बेटी!' कहकर बूढ़ा योद्धा तनिक हँस दिया। उसने गाँठ से सोने की पोटली निकाल कर कहा– 'यह देखो, इतना सोना है।'

'अच्छी बात है। ठहरो, हम उन्हें पागल बना देंगे। बाबा जी, तुम आधी रात को उनकी इच्छानुसार द्वार खोल देना।'

वृद्ध भी हँसता और सिर हिलाता हुआ चला गया।

बारह बज गये थे। चाँदनी छिटक रही थी। कुछ आदमी दुर्ग की ओर छिपे–छिपे आ रहे थे। उनका सरदार काफूर था। उसके पीछे सौ चुने हुए योद्धा थे। संकेत पाते ही द्वारपाल ने प्रतिज्ञा पूरी की। विशाल महराबदार फाटक खुल गया। सौ व्यक्ति चुपचाप दुर्ग में घुस गये। काफूर ने मन्द स्वर में कहा– 'यहाँ तक तो ठीक हुआ। अब हमें उस गुप्त मार्ग से दुर्ग के भीतर महलों में पहुँचा दो, जिसका तुमने वादा किया है।'

राजपूत ने कहा– मैं वादे का पक्का हूँ, मगर बाकी सोना तो दो।' सेनापति ने मुहरों की थैली हाथ में रख दी। राजपूत फाटक में ताला बन्द कर चुपचाप प्राचीर की छाया में चला और लोमड़ी की भाँति चक्कर खाकर कहीं गायब हो गया।

सैनिक चक्रव्यूह में फँस गये, न पीछे का रास्ता मिलता था, न आगे का। वे वास्तव में कैद हो गये थे और अपनी मूर्खता पर पछता रहे थे। मलिक काफूर दाँत पीस रहा था। राजकुमारी की सहेलियाँ इतने चूहों को चूहेदानी में फँसाकर हँस रही थीं।

शत्रु–सैन्य ने दुर्ग पर भारी घेरा डाल रखा था। खाद्य–सामग्री धीरे–धीरे कम हो रही थी। घेरे के बीच से किसी का आना अशक्य था। राजपूत भूखे मर रहे थे। राजकुमारी का शरीर पीला हो गया था, उसके अंग शिथिल हो गये थे; पर नेत्रों का तेज वैसा ही था। उसे कैदियों के भोजन की बड़ी चिन्ता थी। किले का प्रत्येक आदमी उसे देवी की भाँति पूजता था। उसने मलिक काफूर के पास जाकर कहा– 'सेनापति, मुझे तुमसे कुछ परामर्श करना है। मैं विवश हो गयी हूँ। दुर्ग में खाद्य–सामग्री बहुत कम रह गयी है और मुझे यह संकोच हो रहा है कि आपकी अतिथि–सेवा कैसे की जाय। अब कल से हम लोग एक मुट्ठी अन्न लेंगे, आप लोगों को दो मुट्ठी उस समय तक मिलेगा जब तक दुर्ग में अन्न रहेगा। आगे ईश्वर मालिक है।'

मलिक काफूर की आँखों में आँसू भर आये। उसने कहा– ''राजकुमारी, मुझे यकीन है कि आप बीस किलों की हिफाजत कर सकती हैं।''

''हाँ, यदि मेरे पास हों तो!''

राजकुमारी चली आयी।

अठारह सप्ताह बीत गये। अलाउद्दीन के गुप्तचर ने आकर शाह को कोर्निस की।

''क्या राजकुमारी रत्नवती किला देने को तैयार है?''

''नहीं खुदावन्द, वहाँ किसी तरकीब से रसद पहुँच गयी है। अब नौ महीने पड़े रहने पर भी किला हाथ नहीं आयेगा। फिर शाही फौज के लिए अब किसी तालाब में पानी नहीं है। उधर रत्नसिंह ने मालवे तक शाही सेना को खदेड़ दिया है।''

अलाउद्दीन हत–बुद्धि हो गया और महाराव से सन्धि का प्रस्ताव किया।

सुन्दर प्रभात था। राजकुमारी ने दुर्ग–प्राचीर पर खड़े होकर देखा कि शाही सेना डेरे–डंडे उखाड़ कर जा रही है और महाराव रत्नसिंह अपने सूर्यमुखी झण्डे को फहराते, विजयी राजपूतों के साथ, दुर्ग की ओर आ रहे हैं।

मंगल–कलश सजे थे। बाजे बज रहे थे। दुर्ग में प्रत्येक वीर को पुरस्कार मिल रहा था। मलिक काफूर महाराव की बगल में बैठे थे। महाराव ने कहा– ''खाँ साहब, किले में मेरी गैरहाजिरी में आपको असुविधाएँ हुई होंगी, इसके लिए आप माफ करेंगे। युद्ध के नियम कड़े होते हैं। फिर किले पर भारी मुसीबत थी। लड़की अकेली थी। जो बन सका, किया।''

काफूर ने कहा–'' महाराज, राजकुमारी तो पूजने लायक है। वे मनुष्य नहीं, फरिश्ता हैं। मैं जन्म–भर उनकी मेहरबानी को नहीं भूल सकता।''

महाराव ने एक बहुमूल्य सरपेच उन्हें दिया और पान का बीड़ा देकर विदा किया। दुर्ग में धौंसा बज रहा था।

**शब्दार्थ–**

| | | |
|---|---|---|
| छलिया–कपटी, | वक्रदृष्टि– तिरछी नजर, | प्राची– पूर्व, |
| उपत्यका– पहाड़ की तलहटी, | पौर–सिरा, | अभिप्राय–उद्देश्य, |
| चर–सेवक, | रसद–खाद्य सामग्री, | फरिश्ता– देवता, |
| धौंसा– एक विशेष वाद्ययंत्र, | ढोंके– टुकड़े, | आक्रान्त– भयभीत। |

**वस्तुनिष्ठ प्रश्न–**

1. 'जैसलमेर की राजकुमारी' कहानी है–

(क) सामाजिक (ख) पारिवारिक
(ग) राजनैतिक (घ) ऐतिहासिक ( )

2. शत्रु सेना का सेनापति कौन था–
(क) गुलाम मोहम्मद (ख) मलिक काफूर
(ग) गोस मोहम्मद (घ) मलिक मोहम्मद ( )

3. जैसलमेर की राजकुमारी रत्नवती किसकी कन्या थी–
(क) जयसिंह की (ख) मानसिंह की
(ग) जोरावर सिंह की (घ) महराव रत्नसिंह की ( )

4. जैसलमेर की राजकुमारी के कहानीकार हैं–
(क) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (ख) प्रेमचन्द
(ग) आचार्य चतुरसेन (घ) आचार्य हजारी प्रसाद ( )

**अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न–**

1. किले का प्रत्येक व्यक्ति राजकुमारी को किसकी तरह पूजता था।
2. रत्नसिंह ने राजकुमारी को सावधान करते हुए शत्रु के सम्बन्ध में क्या कहा ?
3. दूर पर्वत की उपत्यका में डूबते सूर्य को देखकर राजकुमारी चिंतित क्यों हो उठी ?
4. मलिक काफूर ने आँसू भीगी आँखों से राजकुमारी को क्या कहा ?

**लघूत्तरात्मक प्रश्न–**

1. राजकुमारी ने हँसते हुए राव रत्नसिंह को क्या आश्वासन दिया ?
2. दाँत खट्टे करना मुहावरे का अर्थ बताते हुए वाक्य में प्रयोग कीजिए।
3. शत्रु दल के दुर्ग पर प्रबल आक्रमण कर राजकुमारी ने क्या प्रत्युत्तर दिया ?
4. रात्रि के अंधकार में राजकुमारी ने बुर्ज से नीचे क्या देखा ?

**निबंधात्मक प्रश्न–**

1. जैसलमेर की राजकुमारी कहानी का कथासार लिखिए।
2. जैसलमेर की राजकुमारी कहानी लेखन के पीछे कहानीकार का उद्देश्य क्या रहा है, लिखिए।
3. राजकुमारी ने सेनापति मलिक काफूर को जाकर क्या कहा ?
4. 'जैसलमेर की राजकुमारी कहानी भारतीय दर्शन को प्रतिबिम्बित करने वाली कथा है।' पठित कहानी के आधार पर समझाइए।
5. पठित कहानी नारी के कुशल प्रबन्धन तथा सूझ बूझ को अभिव्यक्त करती है। अपने विचार व्यक्त कीजिए।

*****